© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Engineering and Technology

महाभारत में आयुध–प्रयोग

गुलाब चन्द्र
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

अट्ठारह दिनों तक चलने वाले महाभारत युद्ध में विभिन्न प्रकार के आयुधों का प्रयोग किया गया। अस्त्र एवं शस्त्र आयुध के दो रूप हैं। जो आयुध मन्त्र, तन्त्र या फिर अग्नि को माध्यम बनाकर शत्रु पर फेंका जाय उसे अस्त्र कहते हैं। महर्षि उसना अस्त्र की परिभाषा देते हुए कहते हैं–

अस्यते क्षिप्यते यस्तु यन्त्राग्निभिश्चतदस्त्रम्।
अस्त्रं द्विविधिज्ञेयं नालिकं मांत्रिकं तथा।।[1]

अस्त्र अद्विव्यास्त्र एवं दिव्यास्त्र के रूप में दो प्रकार के होते हैं जिसे महर्षि ने क्रमशः नालिक एवं मान्त्रिक के रूप में बताया है। नालिक के रूप में प्राप्त अस्त्र धनुष–बाण, त्रिशूल, भुशुण्डी आदि हैं तथा मान्त्रिक रूप में ब्रह्मास्त्र, वरुणास्त्र आदि हैं।

जिन आयुधों को हाथ में पकड़कर शत्रु पर प्रहार किया जाय उसे शस्त्र कहते हैं, यथा–तलवार, भाले, गदा आदि।[2] सैन्धव काल से ही मानव आयुधों का प्रयोग करता रहा है। उस काल का मानव यायावरी जीवन यापन करता था तथा उसके प्रमुख हथियार धनुष, भाले आदि ही हुआ करते थे। वैदिक साहित्य में तो धनुष के ऊपर ही एक वेद का निर्माण हुआ है। वेदों से होते हुये पुराण, महाकाव्य, संहिता, स्मृति ग्रन्थों, धर्मशास्त्रों आदि में भी धनुर्विद्या का वर्णन देखने को मिलता है। परन्तु उनमें तीन श्रेष्ठतम् धनुष–भगवान् शिव का पिनाक्, श्रीकृष्ण का शाङ्र्ग एवं अर्जुन का गाण्डीव है। धनुष के लिये चाप, कोदण्ड, कार्मुक, द्रूणादि नाम प्राप्त होते हैं। महाभारत की कथा के आधार पर खण्डव वन को जलाने के लिय अग्निदेव श्रीकृष्ण तथा अर्जुन से निवेदन करते हैं, तब अर्जुन अपने अनुकूल धनुष, रथ तथा अक्षय तुणीर आदि माँगते हैं, अर्जुन के इस प्रस्ताव से अग्निदेव ने वरुण का आह्वान किया तथा वरुणदेव ने तत्काल अर्जुन को गाण्डीव के साथ दो अक्षय तुणीर तथा कपिध्वज से युक्त रथ भी प्रदान किया।[3]

पाण्डवों में श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिर के पास इन्द्र द्वारा प्रदत्त दिव्य धनुष था। इसी प्रकार भीम को वायु देव ने, नकुल को वैष्णव ने तथा सहदेव को अश्विनी कुमार ने दिव्य धनुष प्रदान किया। भीम पुत्र घटोत्कच के पास पौलत्स्य नामक दिव्य धनुष था। बलराम ने जो रुद्र सम्बन्धी श्रेष्ठ धनुष प्राप्त किया था, उसे अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को दिया था। द्रोपदी के पाँच पुत्रों के पास दिव्य धनुष रत्न क्रमशः रुद्र, अग्नि, कुबेर, यम तथा भगवान् शंकर से सम्बन्ध रखने वाले थे।[4]

IJSRSET1844288 | Received : 01 Oct 2017 | Accepted : 20 Oct 2017 | September-October-2017 [(3)6: 1065-1071]

दूर से ही अपने लक्ष्य को वेधने का सबसे उपयुक्त अस्त्र महाभारत में बाण ही था। इसका अग्रभाग नुकीला एवं लौह निर्मित रहता है। पश्चभाग लौह या काष्ठ किसी का भी बना होता है। बाण के लिये वेणु, शर, शलाका, दण्डासन, नाराच तथा शिलीमुख आदि नाम प्रचलित हैं।[5] महाभारत में बाण के सन्दर्भ में दो स्थानों पर वर्णन मिलता है– प्रथम स्थान पर–क्षुर, नाराच, भल्ल और विपाठ।[6] जिसके दोनों किनारे तेज धार वाले होते हैं उन्हें क्षुर के नाम से जाना जाता था। नाराच का केवल अग्रभाग ही तीक्ष्ण होता है, यह सीधे बाण जैसा होता है। विपाठ की आकृति खनती की भाँति होती है, यह दूसरे बाणों से बड़ा होता है। भल्ल की नोंक का पिछला भाग चौड़ा होता है।

नीलकण्ठी टीका के आधार पर सात प्रकार के विशिष्ट बाणों का वर्णन मिलता है[7]– कर्णी, नालीक, वस्तिक, सूची, कपिश, गवास्थिज, गजास्थिज।

जिधर बाण के फल की मुख हो उसके विपरीत मुख वाले दो काँटों से युक्त बाण को कर्णी कहते हैं। शरीर से निकाले जाने पर यह आँत आदि अंगों को अपने साथ खींच लाता है। नालीक अत्यन्त छोटा बाण होता है एवं यह शरीर में पूरा का पूरा प्रवेश कर जाता है। अतएव इसे निकालना कठिन हो जाता है।

वस्तिक फल और दण्ड के मध्य अत्यन्त पतला होता है। इसे जब योद्धा के शरीर से निकाला जाता है तो फलक और दण्ड के बीच से ही यह टूट जाता है। केवल दण्ड ही बाहर निकल पाता है। कर्णी के समान सूची नामक बाण भी होता है परन्तु अन्तर केवल इतना है कि इसमें बहुत से काँटे लगे होते हैं। कपिश का फल बन्दर की हड्डी का बना होता था। सम्भवतः इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है। गाय की हड्डी से निर्मित बाण को गवास्थिज कहा जाता था एवं हाथी की हड्डी से निर्मित बाण को गजास्थिज कहते थे।

तुणीर किसी अस्त्र–शस्त्र के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जाता था, तथापि धनुष एवं बाण के साथ इसका गहरा सम्बन्ध है। बाणों को जिस पात्र में रखा जाता है उसे तुणीर कहते हैं। राम, कृष्ण एवं अर्जुन के तुणीर अक्षय माने जाते थे अर्थात् इसमें बाण कभी समाप्त नहीं होते थे।

आधुनिक काल की बन्दूक की समानता रखने वाले अस्त्र की भाँति महाभारतकालीन भुशुण्डी भी होती थी। इस अस्त्र के द्वारा बहुत दूर तक गोटिकायें फेंकी जाती थी।[7] दैत्य गुरू शुक्राचार्य भी भुशुण्डी को लघुनालिका से सम्बोधित किया है।[8] महाभारतकालीन शतघ्नी की तुलना आधुनिक काल के तोप से की जा सकती है। इसे यन्त्र के नाम से भी जाना जाता है। यह लौह निर्मित अस्त्र है। इसकी सहायता से बारूद तथा पत्थर की गुटिकाओं को दूर तक प्रक्षेपित किया जाता था। धनंजय के साथ निवाच कवच दानवों ने इसका प्रयोग किया।[9] दैत्य गुरू आचार्य शुक्र ने इसे वृहन्नालिक नाम से सम्बोधित किया है। इनके अनुसार, 'जैसे–जैसे नाल की लम्बाई अधिक हो एवं गोले का आकार बड़ा हो वैसे–वैसे ही वृहन्नालिका यन्त्र दूर तक

लक्ष्य भेदने वाला होता है। यह इतना भारी होता है कि बैलगाड़ी आदि के द्वारा इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था'।[10]

त्रिशूल लौह निर्मित अस्त्र होता है, इसके अग्रभाग में तीन फलक होते हैं जो शूल की भाँति नुकीले होते हैं अतएव इसे त्रिशूल नाम दिया गया है। इस अस्त्र का प्रहार शारीरिक शक्ति के द्वारा किया जाता है।[11] जिस प्रकार रथ का पहिया होता है ठीक उसी प्रकार चक्र की भी आकृति होती है। शुक्राचार्य के अनुसार ''जिसके घेरे की लम्बाई छः हाथ की हो, तथा चक्र की तरह गोलाकार हो, प्रान्त में धारदार छुरे लगे हों, जिसका मध्यभाग सुन्दर एवं दृढ़ बना हो, उसे चक्र कहते हैं''।[12]

महाभारत में चक्र का अनेक रूपों में वर्णन मिलता है। भगवान् अग्निदेव ने केशव को खण्डव–वन–दहनकाल में अद्भुत चक्रास्त्र प्रदान किया था, जिसका मध्यभाग वज्र के समान कठोर था।[13] खाण्डव–वन–दहनकाल में ही जब श्रीकृष्ण और अर्जुन देवों के साथ भीषण संग्राम करते हैं तो मित्र देवता एक ऐसा चक्र लेकर आते हैं, जिसके किनारों पर छुरे लगे हुए थे।[14] शक्ति को बर्छी के नाम से भी जाना जाता है। इसे स्वामी कार्तिकेय का प्रधान अस्त्र माना जाता है। इसे धारण करने के कारण ही इनको शक्तिधर कहा गया। महाभारत में युधिष्ठिर ''शक्ति'' के द्वारा ही शल्य का प्राण हरण करते हैं।[15]

महाभारत युद्ध में भिन्दिपाल नामक आयुध का भी प्रयोग किया गया। यह चमड़े और विशेष रस्सी से बना होता है। इसकी सहायता से पत्थर फेंका जाता है। इसका अपर नाम 'नलिका' भी है। भीम एवं अलम्बुष के मध्य युद्ध में अलम्बुष ने इसी अस्त्र का प्रयोग किया था।

दिवु धातु से यत् प्रत्यय के संयोग से 'दिव्य' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है चमत्कार युक्त, अलौकिक या आध्यात्मिक वस्तु विशेष जो आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न है, उन्हें दिव्यास्त्र कहा जाता है। इन अस्त्रों की प्राप्ति तपस्या, गुरु शुश्रुषा या परम्परा से होती है।

वरुणास्त्र वरुणदेव का अस्त्र माना जाता है। इस दिव्यास्त्र की सहायता से जलधारा का प्रयोग किया जाता है। भीष्म ने इसका प्रयोग शाल्ब के घोड़ों पर किया था, जिससे वे मूर्छित हो गये। इन्द्र के अस्त्र को ऐन्द्रास्त्र के नाम से जाना जाता था। इसके प्रयोग से प्राणी पंचतत्त्व को प्राप्त हो जाते थे। भीष्म ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग करके शाल्ब के घोड़ों को यमलोक भेज देते हैं।[16]

भौमास्त्र भूमि देवी अस्त्र कहलाता है। इसके द्वारा भूमि का उत्पादन किया जाता है। अर्जुन के द्वारा अपने अस्त्र–कौशल में इसका प्रदर्शन किया गया था। महाभारत में प्रयुक्त ब्रह्माशिरास्त्र को आचार्य द्रोण ने अर्जुन को उस समय दिया था, जब द्रोणाचार्य की ग्राह से अर्जुन रक्षा करते हैं। इसका प्रयोग मनुष्यों पर सर्वथा वर्जनीय होता है। यदि किसी अल्प तेज वाले पुरुष के ऊपर इसका प्रयोग किया जाय तो यह उसके साथ ही साथ समस्त विश्व को भी भष्म कर सकता है।[17]

आग्नेय अस्त्र, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि यह अस्त्र अग्नि की भीषण वर्षा करता है। सर्वप्रथम इस दिव्यास्त्र को इन्द्र गुरू वृहस्पति ने महर्षि भरद्वाज को दिया था, भरद्वाज ने अग्निवेश को, अग्निवेश ने द्रोण को और आचार्य द्रोण ने अर्जुन को दिया था। अर्जुन ने इस दिव्यास्त्र का प्रयोग अंगारपर्ण गन्धर्व के साथ दुर्योधन को बचाने में किया था। महाभारत में प्रयुक्त वायव्य अस्त्र, वायु देवता का अस्त्र है। इसके द्वारा युद्ध क्षेत्र में भयंकर आँधी चलायी जाती है। गाण्डीवधारी अर्जुन ने अपने अस्त्र कौशल प्रदर्शन के समय इसका प्रयोग कर भयंकर प्रभंजन को उत्पन्न कर दिया था।[18]

पर्जन्यास्त्र पर्जन्य (बादल) देव का अस्त्र है। इसकी सहायता से मेघ को उत्पन्न कर घनघोर वर्षा करायी जाती है। ब्रह्मास्त्र ब्रह्मा का दिव्यास्त्र है। अर्जुन, कर्ण, भीष्म और द्रोण ने महाभारत युद्ध में इसका बहुधा प्रयोग किया था। युद्ध में ब्रह्मास्त्र को शान्त करने हेतु ब्रह्मास्त्र का ही प्रयोग किया जाता था। इसे किसी संकल्प से छोड़ा जाता था। इसके प्रयोग के पूर्व ब्रह्मा का ध्यान किया जाता था। इसके प्रयोग से आकाश से हजारों उल्कायें गिरने लगती हैं, भीष्म शब्द होने लगते हैं, पर्वतों एवं वनों सहित सम्पूर्ण धरा चलायमान हो उठती है। आधुनिक परमाणु बम की भाँति यह अस्त्र व्यवहार करता था।[19]

पर्वतास्त्र की सहायता से पर्वत्र की उत्पत्ति कर दी जाती है। इसका प्रदर्शन धनंजय ने अपने अस्त्र कौशल प्रदर्शन के समय किया था। महाभारत में अर्जुन के द्वारा अस्त्रकौशल में अन्तर्धानास्त्र का प्रदर्शन किया गया जिसकी सहायता से चालक अपने आपको अन्तर्धान कर लेता है, जब चाहे दिखाई दे, जब चाहे विलुप्त हो जाय। अर्जुन की घोर तपस्या के बाद भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर उन्हें पाशुपतास्त्र प्रदान किया था। इसका प्रयोग अल्पशक्ति के पुरुष पर नहीं किया जाता है। यदि प्रयोग कर दिया जाय तो यह समस्त विश्व को भस्म कर सकता है। इसका प्रयोग कर्त्ता मानसिक संकल्प से, दृष्टि से, वाणी से एवं धनुष से शत्रुओं को नष्ट कर सकता है। इसके प्रयोग से मृगसिंह, व्याघ्र, महिष, ऋक्ष, सर्प, गौ, शरभ, हाथी, बानर, सुअर, प्रेत, निशाचर आदि नाना प्रकार के जीवों का प्रादुर्भाव होता है।[20]

सम्मोहनास्त्र के प्रयोग से शत्रु मूर्च्छित अवस्था को प्राप्त हो जाता है, इस अस्त्र का संचालन अर्जुन ही जानते थे, उनके द्वारा इस अस्त्र का संचालन राजा विराट की गायों के संरक्षण हेतु कौरवों के प्रति किया गया था, उस समय केवल भीष्म को छोड़कर सारे योद्धा मूर्च्छित हो गये थे।

महाभारत के संग्राम में केवल अस्त्रों का नहीं वरन् शस्त्रों का भी भरपूर प्रयोग किया गया था। कुछ शस्त्रों पर तो वीरों की सिद्धहस्तता होती थी, यथा गदा पर भीम और दुर्योधन अपनी सिद्धहस्तता सिद्ध करते थे। गदा शस्त्र बुद्धि की अपेक्षा शारीरिक बल की शक्ति से संचालित होता था। शारीरिक रूप से बलिष्ठ योद्धाओं का यह प्रिय शस्त्र रहा है। यथा–विष्णु की कौमोदकी गदा, हनुमान की गदा वृषपर्वा की गदा,

वायु पुत्र भीम की गदा। महर्षि उशना ने बताया है–''आठ पहल वाली, मूल में मोटी और हृदय के बराबर ऊँची दृढ़ दण्डों वाली गदा होनी चाहिये–**''अष्टास्त्रा पृथुवहना तु गदा हृदय सम्मिता''**।[21]

खड्ग, असि, करताल, तलवार, चन्द्रहास, रिष्टि, मण्डलाग्र, कृपाणादि इसके अनेक नाम हैं। खड्ग के तीन अंग होते हैं–कोष, मूठ, फलक। कोष में खड्ग आवृत्त रहती है, इसी को म्यान भी कहते हैं। मूठ से तलवार को पकड़ कर चलाया जाता है। जिस भाग से आघात किया जाता है उसे फलक कहते हैं। महर्षि शुक्र ने करताल का लक्षण इस प्रकार दिया है, ''कुछ टेढ़ा, एक ओर धार वाला चार अंगुल चौड़ा, तीक्ष्ण प्रान्त वाला, नाभि तक ऊँचा, दृढ़ मूठ वाला एवं चन्द्रमा के समान चमकदार''।[22]

महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर की करवाल तीस अंगुल लम्बी, विचित्र कोष वाली तथा सुफलात्मिका थी। इसकी मूठ स्वर्ण निर्मित थी। भीम की तलवार का कोष व्याघ्र चर्म का था। यह अत्यन्त भारी थी, जो दिव्य एवं शत्रुओं के लिये भयंकर थी। अर्जुन की असि दीर्घाकार थी, अर्जुन का यह विशाल खड्ग युद्ध–भूमि में भारी आघात को सहन करने में समर्थ था। नकुल की असि का कोष अज चर्म से बना हुआ था। सहदेव की चन्द्रहास का कोष गो चर्म से निर्मित था, जो सब प्रकार के आघात–प्रत्याघात करने में समर्थ था।[23]

महाभारत युद्ध में प्रयुक्त तोमर नामक आयुध लौह–निर्मित शस्त्र था। इसका अग्र भाग भार युक्त तथा दीर्घ फलक वाला होता था। इसका पिछला भाग काष्ठ दण्ड निर्मित होता था। प्रास नामक शस्त्र को ग्रामीण बोल–चाल की भाषा में भाला कहते हैं। इसमें लम्बा काष्ठ का दण्ड लगा होता है तथा अग्रभाग में लघु एवं तीक्ष्ण लोहे का फलक लगा होता है, इसे कुन्त के नाम से भी जाना जाता है।[24] परशु शास्त्र भी लगभग प्रास के समान ही होता है, अन्तर यह है कि इसका अग्रिम भाग चौड़ा होता है। पश्च भाग में दीर्घाकार दण्ड संयुक्त होता है। इसे फरसा भी कहा जाता है। परशुराम का यह सबसे प्रिय शस्त्र था। महाभारत के द्रोण पर्व में इसका उल्लेख मिलता है।[25]

लोहे के पत्र से घिरी हुयी यस्टिका को परिघ कहते हैं, इसको दो रूपों में देखा जा सकता है–एक लोहे की पत्र वाली एवं दूसरी लोहे के तारों से सुगठित। इसका भी महाभारत में विभिन्न स्थानों पर वर्णन मिलता है। सामान्य रूप से मूसल का प्रयोग धान की कुटाई में किया जाता है परन्तु रणक्षेत्र में प्रयुक्त होने वाला मूसल सम्भवतः लौह निर्मित होता था, यह बलराम जी का प्रिय शस्त्र था।

महाभारत में प्रयुक्त पट्टिश तीन काटों से युक्त, तीखे किनारों वाला शस्त्र था। महर्षि शुक्र के अनुसार ''अपने बराबर लम्बा तथा दोनों ओर जिसके मुख हों तथा जो बीच में हाथ से पकड़ा जाय उसे पट्टिश शस्त्र कहते हैं– **''पट्टिशः स्वसमौ हस्तबुध्नश्योभयतोमुखः''**।[26] महाभारत युद्ध में पाश नामक शस्त्र का प्रयोग भी विभिन्न स्थानों पर प्राप्त होता है। शुक्राचार्य के अनुसार, ''जिसमें तीन हाथ लम्बा दण्ड लगा हो और उसमें

तीन शिरा हो तथा जो लौह तार से निर्मित हो उसे 'पाश' नामक शस्त्र कहते हैं–**''त्रिहस्तदण्डस्त्रिशिखो लौहरज्जुः सुपाशकः''**।[27]

महाभारत में करज नामक शस्त्र का भी प्रयोग किया गया था इसका वर्णन द्रोण पर्व के तीसवें अध्याय में मिलता है। महर्षि शुक्राचार्य का मत है कि, ''पक्के उत्तम लोहे के बने हुये दृढ़ एवं नख के समान तीक्ष्ण नुकीले शस्त्र को करज कहते हैं''।

इस प्रकार महाभारत युद्ध में अस्त्र–शस्त्र दोनों प्रकार के आयुधों का प्रयोग किया गया। जिसमें कुछ दिव्यास्त्र एवं कुछ अदिव्यास्त्रों का भी प्रयोग किया गया। केवल अस्त्र–शस्त्र ही युद्ध क्षेत्र में नहीं रहते उनके साथ ही साथ वाहन, सारथी, ध्वज आदि भी रहते हैं जो परोक्ष रूप से युद्ध संचालन में सहायक होते हैं जिसका समुचित प्रयोग महाभारत में किया गया है।

सन्दर्भ–सूची

1. शुक्रनीति–6 प्र0 4 / 191
2. शुक्रनीति–6 प्र0 191 / 1 / 2
3. आदिपर्व–215 / 19–25 पूना प्रेस
   224 / 4–9 गीता प्रेस
4. द्रोणपर्व–23 / 91–95
5. कौ0 अ0शा0–2 / 34–18
6. आदिपर्व–138 / 6–7
7. वनपर्व–169 / 16 गीता प्रेस
8. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 195–197
9. वनपर्व–169 / 16 गीता प्रेस
10. शुक्रनीति–7प्र0 / 198–199
11. वनपर्व–169 / 15 गीता प्रेस
12. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 215
13. आदिपर्व–224 / 23
14. आदिपर्व–226 / 36, गीता प्रेस
15. शल्यपर्व–17 / 49–51
16. आदिपर्व–102 / 47–49

17. आदिपर्व–132 / 18–22
18. आदिपर्व–134 / 19–21
19. सौप्तिक पर्व–13 / 5–20
20. वनपर्व–173 / 45–54
21. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 212
22. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 213–214
23. विराटपर्व–43 / 19–23
24. द्रोणपर्व–138 / 19
25. द्रोणपर्व–138 / 20
26. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 213
27. शुक्रनीति–4 / 7 प्र0 / 216